सोने वाले चेले
(20:6-12)

लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तकें सम्भवत: प्रेरितों 20 में वर्णित पौलुस के त्रोआस में जाने से कुछ ही वर्ष बाद लिखी गई थीं। दोनों पुस्तकें लिखने के कुछ ही देर बाद, लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकें कलीसियाओं में वितरित की जाने लगीं।[1] कल्पना कीजिए कि आप त्रोआस की कलीसिया के सदस्य हैं और पहली बार पढ़ी जाने वाली पुस्तकों को सुनने के लिए इकट्ठे हुए हैं। पहला अंक पढ़े जाने पर, आप यीशु के जीवन के बारे में सुनकर आनन्दित हो जाते हैं। फिर दूसरी पुस्तक खोली जाती है और आप कलीसिया की स्थापना तथा सुसमाचार के फैलाव के वृत्तांत को सुनकर रोमांचित हो उठते हैं। त्रोआस का उल्लेख मकिदुनिया के लिए बुलाहट के सम्बन्ध में होता है (प्रेरितों 16:8, 11), परन्तु आपकी उत्सुकता विशेषकर तब बढ़ती है जब लूका के ये शब्द पढ़े जाते हैं:

> और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पांच दिन में त्रोआस में उनके पास पहुंचे, और सात दिन तक वहीं रहे।
>
> सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं (20:6, 7क)।

आप यह जानकर रोमांचित हो जाते हैं कि त्रोआस पवित्र इतिहास का एक भाग है!

परन्तु, कुछ ही देर बाद, पढ़ने वाला आगे पढ़ता है:

> और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा (आयत 9)।

निस्संदेह, आप थोड़ा परेशान होने लगते हैं। आपको अहसास होता है कि यह कहानी मसीही लोगों द्वारा बार-बार हर जगह पढ़ी जाएगी और यह घटना ऐसी है जिससे कुछ लोग त्रोआस को याद रखेंगे।

अब उस सभा में एक जवान का चित्र बनाएं, जिसका नाम यूतुखुस है! क्या आपको

लगता है कि जब कहानी सुनाई जा रही थी तो वह बैठे-बैठे सो गया था? क्या उसके चेहरे का रंग बदल गया था?

निस्संदेह, ''कलीसिया में''[2] सोने वालों में यूतुखुस पहला नहीं था और निश्चय ही अन्तिम भी नहीं। एक बार किसी ने मज़ाक में प्रचार करने की परिभाषा देते हुए इसे ''दूसरे लोगों के सोते हुए उनसे बातें करने की कला कहा।'' यूतुखुस के एक आध्यात्मिक वंशज ने लिखा:

> मैंने अपने प्रचारक की आंखें कभी नहीं देखीं;
> वह उनकी दिव्य ज्योति छुपा लेता है;
> क्योंकि प्रार्थना करते समय, वह अपनी,
> और प्रचार करते समय, मेरी आंखें बन्द कर लेता है।

मध्यकाल में धर्म त्याग करने वाली कलीसिया में विभिन्न व्यवसायों के लिए संरक्षक संत होते थे:[3] यूसुफ को बढ़इयों का और अंद्रियास को मछुआरों का संरक्षक संत माना जाता है। किसी ने सुझाव दिया है कि यूतुखुस को उन लोगों का संरक्षक संत होना चाहिए जो कलीसिया में सो जाते हैं!

परेशान करने वाली इस कहानी को पवित्र आत्मा ने नये नियम में इतने प्रभावशाली ढंग से क्यों डाला? फिर से, मैं ज़ोर देता हूं कि लूका ने यह वृत्तांत यूतुखुस को या त्रोआस की मण्डली को व्याकुल करने के लिए नहीं लिखा होगा। बल्कि, परमेश्वर चाहता था कि वे इससे कुछ शिक्षा लें। पिछले पाठ में, हमने आरम्भिक कलीसिया के पारिवारिक वातावरण पर एक संदेश देखा था। इस पाठ में, हम यूतुखुस की विपत्तिकारक झपकी की कहानी से कई सबक देखेंगे। (सावधान: यदि मेरी बातों से आपको नींद आने लगे और आप अपनी कुर्सी से गिर जाएं, तो आपको जिलाने के लिए पौलुस वहां नहीं होगा![4])

महत्वपूर्ण सबक

इससे पहले कि इस घटना से हम कुछ सबक लें, आइए कहानी की समीक्षा करते हैं: पौलुस और उसके साथियों ने पूरा सप्ताह त्रोआस में प्रतीक्षा की थी ताकि वे वहां के संतों से सप्ताह के पहले दिन मिल सकें (आयतें 6, 7क)। जब वे प्रभु भोज लेने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने उन्हें शिक्षा देने और समझाने के अवसर का लाभ उठाया (आयत 7ख)। पौलुस की योजना अगले दिन चले जाने की थी और उसके उनसे दोबारा मिलने की कोई आशा नहीं थी (आयत 38), इसलिए वह उनके साथ ''आधी रात तक बातें करता रहा'' (आयत 7ग)। लूका ने ध्यान दिलाया कि अटारी वाले कमरे में जहां वे बैठे थे ''बहुत दीये जल रहे थे''-जिससे उस छोटे से कमरे में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो गई होगी (आयत 8)।

लोगों से खचाखच भरा हुआ कमरा, ऑक्सीजन की कमी और आधी रात तक सुनते-

सुनते पौलुस के सुनने वाले थके हुए थे: ''और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से[5] झुक रहा था[6]'' (आयत 9क)। ''यूतुखुस'' का अर्थ है ''भाग्यशाली'' या बाद की घटनाओं की रोशनी में ''धन्य''[7] उपयुक्त है। यूनानी भाषा में यूतुखुस को ''जवान आदमी'' कहा जाता है जिसका अर्थ चालीस वर्ष तक की कोई भी आयु हो सकती है। मूल शास्त्र में उसके लिए ''लड़का'' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है, जो सामान्यत: आठ और चौदह वर्ष की आयु के बीच के बच्चे या जवान का संकेत देता है (आयत 12)।

वर्षों से हम जवान यूतुखुस को बुरा भला कहते आ रहे होंगे। उन दिनों बाल-श्रम कानून नहीं होते थे; वहां पहुंचने से पहले सारा दिन काम करके, आराधना सभा में आने तक वह बहुत थक गया होगा। जैसे कि पहले ही सुझाव दिया गया है कि जिस वातावरण में वे इकट्ठे हुए थे, उसमें झपकी लगने की सम्भावनाएं थीं। हो सकता है कि अपनी जगह किसी बुज़ुर्ग को देकर यूतुखुस तंग होकर खिड़की में बैठ गया हो।[8] परन्तु, छोटी आयु और असुविधाजनक स्थान के बावजूद, यूतुखुस संतों के साथ मिलने के लिए आ गया था और, आराधना के अधिक देर चलने के बावजूद सभा को छोड़कर नहीं गया था! व्यक्तिगत रूप से, मैं इस जवान से प्रभावित हूं जो स्पष्टत: प्रभु और उसकी कलीसिया से प्रेम करता था, और आराधना के देर तक चलने पर भी वहां रुकने को तैयार था!

फिर भी, संकट निकट ही था। उन दिनों, दीवारों में खिड़कियां सीधी ही रखी जाती थीं जो आसानी से खुल सकती थीं। इस कारण जब यूतुखुस एकदम से गिरा तो उसे पकड़ा नहीं जा सका। ''और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा'' (आयत 9ख)। (मर्फी के नियम[9] के अनुसार कोई हमेशा खिड़की के *बाहर* ही गिरेगा, *अन्दर* नहीं।) पिछले पाठ में जब लड़के को ''मरा हुआ उठाया गया'' (आयत 9ग) तो मैंने भाइयों की भावनाओं को चित्रित करने की कोशिश की थी।

पौलुस सीढ़ियां उतरने वाले दूसरे सदस्यों के पीछे-पीछे गया (आयत 10); वह सम्भवत: वहां उपस्थित कई लोगों से बड़ा था इसलिए थोड़ा धीरे गया होगा।[10] अन्त में लड़के के पास पहुंचकर शायद एलिय्याह और एलीशा की तरह (1 राजा 17:21; 2 राजा 4:34, 35) वह ''उससे लिपट गया'' (आयत 10ख)। ''और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है'' (प्रेरितों 20:10ग)। पौलुस के शब्दों का यह अर्थ नहीं था कि लड़का गिरने से मरा नहीं था। लूका ने यह नहीं लिखा कि यूतुखुस को ''मुर्दों *के लिए* उठाया गया,'' या ''उन्हें *लगा* कि वह मर गया।'' डॉक्टर लूका ने कहा कि वह जवान **म-र** गया था (आयत 9)।[11] बल्कि, पौलुस के कहने का अर्थ था, कि प्राण उस लड़के में लौट आया था (आयत 12)। यह आश्चर्यकर्म अति प्रभावशाली है: उसकी टूट चुकी हड्डियां जुड़ जानी थीं, जोड़ों ने अपने स्थान पर आ जाना था, फट चुकी लहू की नसों की मरम्मत हो जानी थी, खराब हुए अंग फिर से ठीक हो जाने थे, घाव भर जाने थे और उसके हृदय ने फिर से धड़कना शुरू कर देना था!

कई लोग आज दावा करते हैं कि उनके पास भी वही शक्ति है जो प्रेरितों के पास थी,

परन्तु मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि यूतुखुस की तरह नया जीवन पाने वाला आपको कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। मैंने ''चंगाई सभाओं'' की बहुत सी ख़बरों वाले समाचार पत्रों की कतरनें अपनी फाइल में रखी हुई हैं जिसमें लोग हृदयाघात या किसी ऐसे रोग से मर गए। उनमें से किसी को भी दोबारा जीवन नहीं मिला। हमारे इलाके में एक सुप्रसिद्ध ''चंगाई सेवक'' एक बार तम्बू में मीटिंग ले रहा था कि तम्बू गिर गया, जिससे कई लोग मारे गए और बहुत से घायल हो गए। ''चंगाई देने वाले ने'' किसी को भी न तो जिलाया और न ही चंगा किया। आज लोगों के पास वह सामर्थ *नहीं* है जो प्रेरितों के पास थी।

यूतुखुस को जिलाने के लिए पौलुस के पास कई कारण होंगे: पहला, उसे लड़के से और त्रोआस की कलीसिया में अन्य सदस्यों से लगाव था। दूसरा, आश्चर्यकर्म से अभी-अभी सुनाए गए वचन की पुष्टि हो गई (मरकुस 16:20)। कई लोगों को और भी उद्देश्य दिखाई देता है। वे कलीसिया द्वारा यीशु की मृत्यु और जी उठने को मनाने (20:7) और उस लड़के के मुर्दों में से जी उठने में समानता बताते हैं (आयतें 9, 10)। यूतुखुस को फिर से जिन्दा करने से जी उठने की धारणा में सदस्यों के विश्वास को मान्यता मिल गई!

यही कहानी है। अब, आइए ध्यान दें कि इसमें हमारे लिये क्या सीख है।

सुनने वालों के लिए शिक्षाएं

पहले, सुनने वालों के लिए शिक्षाएं मिलती हैं। सबसे स्पष्ट बात यह है कि कलीसिया में सोना परेशानी का कारण बन सकता है। एक बार प्रचार करते हुए मुझे एक ऐसे आदमी का पता चला जिसकी पत्नी उसे जगाए रखने के लिए उसकी बगल में लगातार कोहनी मार रही थी। उसकी पत्नी ने मुझे बताया, ''जॉर्ज के सोने से मुझे अधिक परेशानी नहीं होती, परन्तु मैं परेशान इसलिए होती हूं कि इनके खर्राटों से आराधना करने वाले दूसरे लोगों को परेशानी होती है।'' बहुत से प्रचारकों के पास किसी न किसी तरह की कम से कम एक कहानी अवश्य होगी जिसमें कलीसिया में सोने के कारण किसी को परेशानी हुई। मेरा एक मित्र गाने में अगुआई करने वाले किसी व्यक्ति के बारे में बताता है जो प्रचार आरम्भ होते ही सो गया। अपना प्रवचन शुरू करने के थोड़ी देर बाद, मेरा मित्र नाटकीय प्रभाव देने के लिए रुका। उस समय तक, गाने में अगुआई करने वाला जाग उठा था। प्रचारक को शांत देखकर, उसे लगा कि प्रवचन पूरा हो गया और वह तुरन्त खड़ा होकर गाने में अगुआई करने लगा।[12]

साफ बात तो यह है, कि यूतुखुस की तरह कुछ लोगों के पास सोने के अपने-अपने कारण होते हैं। कई बीमार होते हैं या किसी अन्य शारीरिक परेशानी के कारण सो जाते हैं। जो दवाई लेते हैं, उन्हें आराधना में जागने की कोशिश करनी पड़ती है। शिफ्टों में काम करने वाले सारी रात काम करने के बाद आराधना में आते हैं। कई बार माताएं बच्चों की जिद के कारण जल्दी उठ जाती हैं। मेरी बात सुनें: मैं धन्यवाद देता हूं कि जब आप नींद पर काबू नहीं पा सकें, तब भी आप आराधना में आते हैं और आपको आंखें खुली रखने के लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ता है!

हम में से शेष का क्या हाल है ? उनके विषय में क्या कहें जो शनिवार देर रात तक टी.वी. देखने या मित्रों के यहां जाने के कारण रविवार सुबह जागते ही नहीं ? उनके विषय में क्या कहें जो आत्मिक बातों में दिलचस्पी ही नहीं लेते ? चाहे गीत कितने भी प्रेरणादायक क्यों न हों, प्रार्थनाएं कितनी भी उत्साहित करने वाली क्यों न हों, प्रवचन कितने भी जोश दिलाने वाले क्यों न हों, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता! यही लोग हैं, जिनकी मुझे चिन्ता है। यदि आप अपने आपको इस प्रकार के लोगों में पाते हैं, तो ध्यान दें कि हो सकता है आप कभी तीसरी मंजिल से गिरकर तो न मरें परन्तु आपकी आत्मिकता थम गई है और आत्मिक मृत्यु होने वाली है! यही समय है कि ''आत्मा और सच्चाई से भजन'' करना सीख लें (यूहन्ना 4:24)!

प्रचारकों के लिए सबक

यूतुखुस की कहानी में प्रचारकों के लिए भी एक या दो सबक मिल सकते हैं। प्रचारक इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाने के लिए प्रसिद्ध हैं कि पौलुस ने आधी रात तक यह प्रमाणित करने के लिए प्रचार किया कि देर तक वचन सुनाना अर्थात ल-म्-बा प्रवचन शास्त्र के अनुसार है।[13] परन्तु, ध्यान दें कि पौलुस वहां पर न तो पिछले रविवार को था और न ही उसने अगले रविवार को वहां होना था। उसकी स्थिति उन प्रचारकों से बिल्कुल भिन्न थी जो हर रविवार उन्हीं लोगों से मिलते हैं। पौलुस का लम्बा संदेश कभी-कभी लम्बे प्रवचन देने को उचित ठहराता है, परन्तु हर सप्ताह मिलने वाले उन्हीं लोगों में घुमा फिराकर बातें करने को उचित नहीं ठहराता। कहा जाता है कि मानवीय शरीर के दो सिरे होते हैं, एक सिरा उसी बात को समा सकता है जिसे दूसरा सिरा सहन कर सकता हो। परमेश्वर के प्रवक्ता होने के नाते, हमें अपने प्रवचनों को लोरियां बनने से बचाने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए।

पर्यावरण पर सबक

हमें यहां पर प्रार्थना सभा के स्थान की भौतिक परिस्थितियों पर भी एक सबक मिल सकता है। मैं एक बार फिर ''जिस अटारी पर [वे] इकट्ठे थे उसमें बहुत दीये जल रहे थे'' (आयत 8) की ओर आता हूं, जिनके कारण सम्भवत: ऑक्सीजन की कमी हो रही थी। एक व्याख्या में कहा गया है, ''अटारी वाले कमरे में गर्मी तथा उमस थी।'' पिछली प्रस्तुति में मैंने लिखा था कि कलीसिया कहां इकट्ठी होती है, इसका अधिक महत्व नहीं; परन्तु इकट्ठे होने का स्थान बनाने की कोशिश करने का लाभ है वह कहीं भी और कैसी भी हो, वहां आराधना की जा सके। कई बार हवादार कमरे न होने के कारण संतों को नींद आने लगती है।

अति महत्वपूर्ण सबक

यूतुखुस की कहानी इस तथ्य को रेखांकित करती है कि आराधना में शारीरिक नींद

परेशानी बन सकती है और उसका पक्ष नहीं लिया जा सकता, परन्तु कई बार शारीरिक उनींदापन केवल किसी और गम्भीर परेशानी अर्थात *आत्मिक* नींद का लक्षण है। पौलुस ने कुरिन्थियों को प्रभु भोज का दुरुपयोग करने के लिए फटकारते हुए उनके आत्मिक रोग के निदान के लिए यह इलाज किया: ''इसी कारण तुम में से बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से *सो* भी गए हैं'' (1 कुरिन्थियों 11:30)। जब हम ''कलीसिया में सोने'' की बात करते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे हम मण्डली की बात कर रहे हों। दूसरी ओर, यदि ''कलीसिया'' का अर्थ हम ''मसीह की देह''[14] मानते हैं, तो मुझे ''कलीसिया में सोने'' वाले लोगों के बारे में *अधिक* चिन्ता होती है। किसी प्रचारक के लिए किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण कामों में से एक लोगों को उनकी आत्मिक नींद से जगाना है!

पौलुस ने आत्मिक नींद में झुकने वाले सिरों को चुनौती दी: ''... अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है ...'' (रोमियों 13:11)। फिर, उसने लिखा ''हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी'' (इफिसियों 5:14)।

यदि हम त्रोआस के भाइयों की नकल करें तो हमें फिर से नई ताजगी मिल सकती है। वे आराधना में, प्रभु भोज लेने में तंग और असुविधाजनक स्थान पर भी समय पर जाने के लिए विश्वासी थे। उनके मन में परमेश्वर के वक्ता और जो कुछ उसने परमेश्वर के वचन से प्रचार किया, के प्रति सम्मान था। हमें उनके पद चिह्नों पर चलने की आवश्यकता है।

सारांश

इस कहानी के सबक सभी सुनने वालों पर लागू होते हैं। आराधना के समय हर एक को जो कुछ भी वह करता है, चौकन्ने रहकर करना चाहिए ताकि वह सचमुच आराधना कर सके। हम में से जो प्रचार करते हैं उनके लिए भी सबक है कि हमें अपने पाठों को प्रभावशाली और चुनौतीपूर्ण बनाने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए। परन्तु अति महत्वपूर्ण सबक उनके लिए है जिनकी आत्मिक दिलचस्पी कम हो गई है। ''इसलिए हम औरों की नाईं सोते न रहें परन्तु जागते और सावधान रहें'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:6)!

पाद टिप्पणियां

[1]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के आरम्भिक दो पाठों में परिचय देखिये। [2]यहां ''कलीसिया में'' का अर्थ ''[आराधना कर रही] मंडली'' है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 197 पर शब्दावली में देखिये ''कलीसिया''। [3]बाइबल में ''संरक्षक संतों'' की धारणा की शिक्षा नहीं मिलती। यह पैरा हास्यास्पद लगता है। कुछ स्थानों पर शिक्षा देने या प्रचार करने के लिए इसका उपयोग अनुपयुक्त हो सकता है। [4]एक प्रचारक जो बिना खिड़की वाले भवन में प्रचार करता है, यूतुखुस की कहानी बताता हुआ कहता है, ''इसीलिए तो हमने खिड़कियां नहीं लगवाईं कि कहीं आप गिर न जाएं। परन्तु, आप बेंच से भी गिर सकते हैं, इसलिए मैं आपको चेतावनी दे देता हूं।...'' [5]यूनानी शब्द का अनुवाद ''नींद'' उसी शब्द से है जिससे हमें ''सम्मोहन'' शब्द मिला है। [6]वाक्य में जिस काल का इस्तेमाल किया गया है उससे संकेत मिलता है कि यह धीरे-धीरे हो रहा था। [7]कुछ लोगों का मानना है कि नाम से संकेत मिलता है कि वह स्वतंत्र हुआ एक दास था। [8]कुछ

लोगों का सुझाव है कि जब उसे लगा कि नींद आ रही है तो उसने ताज़ी हवा लेने के लिए खिड़की में से मुंह बाहर निकाला। [9]उन लोगों के लिए जो अर्ध-हास्यकर, अर्ध गम्भीर ''मर्फी के नियम'' से परिचित नहीं हैं, इस ''नियम'' में केवल यह घोषणा है कि ''जो गलत होना है, वह गलत ही होगा।'' [10]उसे पता था कि वह लड़के को जीवित कर सकता है, इसलिए दूसरों की तरह वह उत्तेजित नहीं हुआ होगा।

[11]वह जवान मरा था या नहीं, फिर भी वहां एक बड़ा आश्चर्यकर्म हुआ था, क्योंकि यदि जी उठने का नहीं, तो चंगाई का आश्चर्यकर्म तो हुआ ही था। परन्तु, शास्त्र में स्पष्ट संकेत है कि लड़के को मुर्दों में से जिलाया गया था। यह पतरस और पौलुस की सेवकाई के बीच बहुत सी समानताओं में से एक है: पतरस ने दोरकास को मुर्दों में से जिलाया था (प्रेरितों 9), और पौलुस ने यूतुखुस को। [12]इस उदाहरण के स्थान पर आप कोई व्यक्तिगत अनुभव भी बता सकते हैं। [13]''लम्बा'' शब्द समझाने के लिए है। किसी प्रवचन को किसी एक क्षेत्र के लिए लम्बा माना जा सकता है और किसी और जगह वही प्रवचन छोटा लग सकता है, इसी प्रकार छोटा प्रवचन कहीं पर लम्बा और कहीं पर छोटा लग सकता है। ''लम्बे'' से मेरा भाव यह है कि सुनने वालों को ध्यान में रखकर बताया जा सकता है कि उनके लिए लम्बे प्रवचन का क्या अर्थ है। [14]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 197 पर शब्दावली में देखिये ''कलीसिया''।

नये नियम में नींद की किस्में

I. मौत की नींद (यूहन्ना 11:11; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13, 14)।
   (क) केवल शरीर के लिए (फिलिप्पियों 1:21, 23)।
   (ख) दिखाता है कि मृत्यु स्थाई नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:51)।

II. उदासीनता की नींद (रोमियों 13:11)।
   (क) यह अपनी पसन्द है।
   (ख) समय के लिए सचेत नहीं हो सकता क्योंकि उद्धार निकट है।
   (ग) युद्ध के महत्व के प्रति सचेत नहीं हो सकता (मत्ती 26:36-39)।

III. आत्मिक बीमारी की नींद (1 कुरिन्थियों 11:30)।
   (क) प्रभु के साथ सही ढंग से चलने में असफल रहने के कारण आती है। पौलुस ने कहा कि प्रभु भोज लेने में असफल होने के कारण वे बीमार हो गए थे।
   (ख) प्रभु से और दूरी बढ़ने का कारण बनती है। पौलुस ने संकेत दिया कि उनकी बीमारी के कारण भोज का दुरुपयोग हो रहा था।

IV. शारीरिक थकावट की नींद (प्रेरितों 16:27; 20:9, 10)।
   (क) यहां तक कि हमारे प्रभु को भी आराम की आवश्यकता थी।
   (ख) उचित आराम लें।
   (ग) हम अपने शरीरों को अनुमति दें या न, वे सो ही जाएंगे।